'ब्रजभाषा में रचित तुलसीदास एवं सूरदास के रामकाव्य का अनुशीलन'

डॉ. प्रीति सिंह
सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला
सह-अध्येता (IIAS) शिमला

'राम रामेति रामेति रमे रामे मनोरमे ।

सहस्त्रनाम ततुल्यम राम नाम वरानने ।'

शोध सार-

राम भारतीय संस्कृति और साहित्य में सर्वाधिक लोकप्रिय चरित्र है। राम और रामकथा प्रत्येक युग एवं परिस्थिति के युगानुरूप अपने स्वरूप में परिवर्तित होते हुए प्रासंगिक रही है। रमयते कणे कणे इति राम राम अर्थात जो कण कण में व्याप्त है, वही राम है। राम उच्चतर मानवमूल्य एवं आदर्श के पर्याय हैं। भारत की विभिन्न भाषाओं व लोकभाषाओं में श्रीराम को समाज की शीर्षस्थ विभूति के रूप में वर्णित किया गया है। संपूर्ण वाङ्मय एवं इतिहास में राम ही ऐसे नायक हैं, जिनका चरित् गान उत्तर-दक्षिण-पूरब- पश्चिम भारत के कण-कण में समाहित है। भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति में विष्णु के अवतारों में दो अवतार जनमानस के सम्मुख विद्यमान है, जिसमें राम और कृष्ण के स्वरूप और चरित्र को आधार माना गया है। कृष्ण लोकरंजक रूप में विराजमान है, जिनके चरित्र में कृषण की अद्भुत क्षमता है। राम लोकरक्षक एवं मर्यादा पुरुषोत्तम है। अपने उदात्त चरित्र, शील ,शक्ति एवं सौंदर्य के कारण उनका चरित्र लोक जनमानस में सर्वाधिक प्रिय एवं आत्मसात करने योग्य है। राम के उदात्त चरित्र एवं शील का निरूपण गोस्वामी जी करते हैं

"जो संपत्ति सिव रावनहि दीन्हि दिएं दस माथ ।

सोइ संपदा विभीषनहि सकुचि दीन्हि रघुनाथ ।।"[1]

(श्रीरामचरितमानस, गोस्वामी तुलसीदास, पृष्ठ सं-655)

राम की इस लोकप्रियता का प्रत्यक्ष प्रमाण सभी भारतीय भाषाओं में रामकाव्य सृजन परंपरा को माना जा सकता है। रामकथा के विस्तार एवं सृजन की विविधता को लेकर गोस्वामी जी लिखते हैं -

"रामकथा कै मिति जग नाहीं। असि प्रतीति तिन्ह के जग माहीं ।

नाना भांति राम अवतारा। रामायन सत कोटि अपारा ।।"[2]

(रामचरितमानस, गोस्वामी तुलसीदास, पृष्ठ संख्या -35)

अर्थात संसार में राम कथा की कोई सीमा नहीं है। रामकथा अनंत है। गोस्वामी जी कहते हैं कि विविध प्रकार से श्री राम जी के अवतार हुए हैं और सौ करोड़ तथा अपार रामायण है। अतः रामकथा की परंपरा साहित्यिक भाषाओं के

साथ-साथ लोक भाषाओं में भी विद्यमान है। भारतीय साहित्य में आदिकाल से राम एवं राम कथा का महत्व रहा है। रामकथा का मूल स्रोत आदिकवि बाल्मीकि कृत रामायण है। विभिन्न भारतीय भाषाओं में भी इसी राम कथा को आधार बनाकर अनेकों रामचरित की कथा का निरूपण हुआ है। वर्तमान में भी रामकथा विषयक अनेक नई रचनाओं का सृजन विभिन्न भाषाओं में किया जा रहा है। राम काव्य की परंपरा संस्कृत भाषा से प्रारंभ होकर पालि, प्राकृत, अपभ्रंश, आधुनिक भारतीय भाषाओं के साथ लोकभाषा, बोलियां एवं विदेशी भाषाओं में भी रचा बसा है।

भाषा हमारे भावों को अभिव्यक्त करने का सशक्त माध्यम है। भाषा या बोली स्थान विशेष की संस्कृति व संस्कारों की परिचायक होती है। इसलिए भारत के विभिन्न भाषाओं और बोलियों ने भी अपने-अपने ढंग से रामकथा को आत्मसात किया है, किंतु जिस भाषा को समाज का प्रत्येक जन सहज और सहर्ष स्वीकार करें, वही लोकभाषा अर्थात् जनभाषा कहलाती है। इसी क्रम में ब्रजभाषा के महत्व और प्रभाव को समझा जा सकता है। ब्रजभाषा अत्यंत दीर्घ अवधि तक काव्य की भाषा के रूप में स्थापित रही, जिसमें अनेक कवियों ने काव्य सृजन किया।

जब हम रामकाव्य की चर्चा करते हैं तो भाषा की दृष्टि से अवधी को ही अभिव्यक्ति का माध्यम मानते हैं। उसके पीछे के दो कारण स्वीकार किए जा सकते हैं। एक राम का जन्म-स्थान अयोध्या दूसरा वहां की बोली अवधी के कारण। एक और विचार सामने आता है गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित रामचरितमानस। रामकथा को जन-जन तक पहुंचाने एवं रमयते कणे कणे इति राम: की युक्ति को यथार्थ धरातल पर स्थापित करने का श्रेय गोस्वामी जी को ही जाता है।

ब्रजभाषा की जब हम चर्चा करते हैं तो कृष्ण का स्वरुप एवं उनकी छवि सामने आती है। उसके पीछे भी कारण यही जान पड़ता है, जिसमें श्री कृष्ण का जन्मक्षेत्र ब्रजमंडल एवं वहां की बोली ब्रज का होना है। और एक कारण यह भी हो सकता है कि कृष्ण काव्य का सृजन अधिकांशत: ब्रजभाषा में ही किया गया।

इन दोनों तथ्यों पर चिंतन करने के पश्चात यह प्रश्न उठता है कि ब्रजभाषा में जो रामकाव्य या रामचरित लिखा गया, क्या उसका स्वरूप कृष्ण के समान है? कृष्ण की बाल लीला, प्रेम लीला, रासलीला आदि तत्व श्री राम के चरित् में क्या स्थापित हो सकते हैं? ब्रजभाषा में रचित काव्य के नायक कृष्ण है। जब हम ब्रजभाषा में राम के चरित्र का निरूपण करते हैं तो रामचरित के उदात्ततत्व, संवेदना पक्ष, एवं लोकमंगल का भाव किस प्रकार से वर्णित होता हैं। उसका अध्ययन अत्यंत आवश्यक है। इसी दृष्टि को निरूपित करना शोध पत्र का मुख्य ध्येय है।

ब्रजभाषा में रामकाव्य सृजन की दीर्घ परंपरा देखने को मिलती है। जिसमें रामानंद कृत रामार्चन पद्दति, वैष्णवमहात्ज़ भास्कर राम रक्षा स्त्रोत, ईश्वर दास कृत भरत मिलाप, विष्णु दास कृत रामायण कथा, सूरदास कृत सूरसागर का नवम् स्कंध गोस्वामी तुलसीदास कृत गीतावली कवितावली विनय पत्रिका दोहावली प्राणचंद चौहान कृत रामायण महानाटक, गुरु गोविंद सिंह कृत रामावतार या गोविंद रामायण, केशव दास द्वारा रचित रामचंद्रिका आदि रचनाएं प्रमुख है।

प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य ब्रजभाषा में रचित रामकाव्य का अनुशीलन करना है। इसके केंद्र में गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित कवितावली एवं गीतावली है। सूरदास कृत सूरसागर के नवम स्कंध में वर्णित राम कथा का अवलोकन किया जाना है। इसमें भी राम के जीवन से जुड़े मार्मिक प्रसंगों को देखने का प्रयास किया गया है। इन

भक्त कवियों ने राम चरित के उदात्त गुणों का वर्णन जनमानस की भाषा अर्थात ब्रजभाषा में किस प्रकार से किया है। उसका अनुशीलन एवं अध्ययन किया गया है।

प्रस्तुत शोध पत्र में निम्नलिखित प्रश्नों पर चिंतन किया गया है-

1. ब्रजभाषा में राम काव्य की परंपरा क्या है?

2. ब्रजभाषा के नायक कृष्ण स्वीकार किए गए हैं, जब उस भाषा में राम के चरित्र को वर्णित किया गया, तो क्या अंतर आया?

3. कृष्ण के लोकरंजक रूप के स्थान पर राम के लोकरक्षक चरित्र को किस प्रकार निरूपित किया गया?

4. श्री राम के उदात्त चरित्र, शील, रामत्व की अवधारणा एवं संवेदना को ब्रजभाषा के कवियों ने किस प्रकार रेखांकित किया?

5. समाज और जनमानस का ध्यान इस ओर आकर्षित करना कि अवधी के साथ ब्रजभाषा में भी रामकाव्य का अद्भुत सृजन किया गया है।

6. राम के जीवन से जुड़े मार्मिक प्रसंगों (जिसमें रामजन्म, बाल लीला, सीता-राम संवाद (वन गमन) भरत-राम संवाद (चित्रकूट प्रसंग), लक्ष्मण का मूर्छित होना) सीता-हनुमान संवाद, राम की कृपादृष्टि) का अवलोकन किया गया है।

बीज शब्द - राम काव्य की परंपरा, ब्रजभाषा का स्वरूप, रामतत्व और संवेदना, उदात्त चरित्र, रामचरित के विविध अवयव, विग्रहराम, समन्वय, आदर्श, कवितावली, गीतावली, सूरसागर।

शोध प्रविधि- प्रस्तुत शोध पत्र में आलोचनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध प्रविधि का प्रयोग किया जा रहा है। आलोचनात्मक शोध पद्धति के अंतर्गत विषय- वस्तु का विश्लेषण करने के आधार पर निर्णय लेने की प्रक्रिया समाहित होती है। अतः ब्रज भाषा में रचित तुलसी का राम काव्य एवं सूर के रामकाव्य के विभिन्न आयामों का निरूपण किया गया है।

विषय प्रवेश -

राम-नाम के महत्व को समाज के प्रत्येक वर्ग ने विविध रूप में स्वीकार किया है, फिर वह निर्गुण राम हो या सगुण राम। राम-नाम के महत्व एवं प्रताप को गोस्वामी जी वर्णित करते हैं -

"जान आदिकवि नाम प्रतापू।

भयउ सुद्ध करि उलटा जापू॥

सहस नाम सम सुनि सिव बानी।

जपि जेई पिय संग भवानी॥"[3]

(रामचरित मानस, गोस्वामी तुलसीदास, पृष्ठ संख्या -22)

अर्थात आदिकवि वाल्मीकि जी रामनाम के प्रताप को जानते हैं, जो उल्टा नाम (मरा-मरा) जपकर पवित्र हो गए। शिव जी के इस वचन को सुनकर कि एक राम-नाम सहस्त्र नाम के समान है, पार्वती जी सदा अपने पति शिव जी के साथ राम- नाम का जप करती हैं। यह भी कहा जाता है कि 'उल्टा नाम जपत जग जाना, बाल्मीकि भए ब्रह्म समाना।'

रामायण का अर्थ दो रूपों में लिया जा सकता है। राम का अयन अर्थात् घर, दूसरा राम का अभियान या परंपरा। अभियान भी ऐसा जो लोकमंगल, समरसता, समन्वय की दृष्टि को अपने में समाहित करता हो। राम के विविध विशेषण स्वीकार किए गए हैं, जिसमें- प्रजानां हिते रतः, प्रजाहित्, सर्ववत्सल, विग्रहःराम, सर्वभूतहितात्मा, सर्वलोकशरण, सर्वभूतहिते रत:, लोकहिते युक्त:, सर्वस्य लोकस्य हितेश्वभिरत: सदा।

भारतीय संस्कृति एवं जनमानस के संपूर्ण संरचना को गढ़ने-रचने में रामकथा सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। मानवीय चेतना व उदात्त मूल्यों का पर्याय ही रामकाव्य है। रामकथा के विषय में कामिल बुल्के कहते हैं -

"रामकथा अनेक रूप धारण करते हुए शनै: शनै: संपूर्ण भारतीय संस्कृति में व्याप्त हो गई है। उसकी अद्वितीय लोकप्रियता निरंतर अक्षुण्ण ही नहीं रही वरन् शताब्दियों तक बढ़ती रही है। कारण स्पष्ट है- मानव हृदय को आकर्षित करने की जो शक्ति रामकथा में विद्यमान है, वह अन्यत्र दुर्लभ है।" [4]

(भारतीय भाषाओं में राम कथा, संपादक डॉ प्रभाकर सिंह, पृष्ठ सं- 5)

भाषा के आधार पर जब हम रामकाव्य की सृजन परंपरा का अवलोकन करते हैं तो तुलसी का ब्रजभाषा में रचित रामकाव्य अत्यंत महत्वपूर्ण है। कवितावली, गीतावलीमानस के आधार पर सात कांडों में विभक्त है। विनयपत्रिका को भक्तों का कंठाहार स्वीकार किया गया है, जिसमें गोस्वामी जी राम को पत्र लिखते हैं एवं अपने और समाज के उद्धार की प्रार्थना करते हैं। दोहावली में राम- नाम जप की महत्ता ,राम के जीवन के विविध प्रसंगों का निरूपण किया गया है। तुलसी रामभक्त कवि हैं। गोस्वामी जी के जीवन का ध्येय रामचरित का गान ही रहा है। उन्होंने तत्कालीन समय में प्रचलित काव्य की दोनों भाषाओं का प्रयोग काव्य सृजन में किया है। तुलसी की भाषा को लेकर रामचंद्र शुक्ल लिखते हैं -

"हिंदी कविता के प्रेमी मात्र जानते हैं कि उनका (गोस्वामी तुलसीदास) ब्रजभाषा और अवधी दोनों भाषाओं पर समान अधिकार था। ब्रजभाषा का जो माधुर्य हम सूरसागर में पाते हैं वही माधुर्य और भी संस्कृत रूप में हम गीतावली और श्रीकृष्णगीतावली में पाते हैं। ठेठ अवधी की जो मिठास हमें जायसी की पद्मावत में मिलती है, वही जानकीमंगल, पार्वतीमंगल, बरवैरामायण और रामललानहछू में हम पाते हैं। यह सूचित करने की आवश्यकता नहीं कि न तो सूर का अवधी पर अधिकार था और न जायसी का ब्रजभाषा पर।"[5]

(हिंदी साहित्य का इतिहास, रामचंद्र शुक्ल, पृष्ठ सं- 88)

गोस्वामी जी का भाषिक औदात्य तत्कालीन समय से लेकर वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भी प्रासंगिक है। सूरदास कृष्ण भक्त कवि है। सूर के काव्य सृजन का उद्देश्य श्री कृष्ण के चरित का गान रहा है, किंतु उन्होंने सूरसागर के नवम स्कंध में राम के जीवनचरित्र को अत्यंत मनोरम रूप से वर्णित किया है। नवम स्कंध को पढ़ते हुए कहीं ऐसा प्रतीत

नहीं होता कि सूर के हृदय में राम के प्रति दोयम भाव है। सूरसागर में मुख्य रूप से कृष्ण की लीलाओं का ही गान है, लेकिन रामकथा से जुड़े पद रामचरित को वर्णित करने में पूर्ण रूप से सक्षम है।

सूरदास ने भी राम के चरित्र का निरूपण कांडों के आधार पर ही किया है। सूरसागर के नवम स्कंध में राजा पुरुरवा, च्यवन, हलधर, राजा अंबरीष और सौभर ऋषि की कथा है। तत्पश्चात मृत्युलोक में गंगा जी के आने का वर्णन है। परशुराम अवतार के पश्चात सूरदास ने राम- अवतार के कारणों का निर्देश किया है। इस स्कंद में संक्षेप से 157 गेय पदों में संपूर्ण रामचरित का निरूपण देखने को मिलता है। सूर राम के जन्मोत्सव का अद्भुत वर्णन करते हैं -

"रघुकुल प्रगटे है रघुबीर।

देस-देस ते टीकौ आयौ, रतन-कनक-मनि हीर ॥...

अजोध्या बाजति आजु बधाई।

गर्भ मुच्यौ कौसिल्या माता, रामचंद्र निधि आई ॥

.. चारि पुत्र दसरथ के उपजे, तिहुं लोक ठकुराई।

सदा-सर्बदा राज राम कौ, सूर दादि तहं पाई ॥"[6]

(सूररामचरित्रावली, सूरदास कृत, अनुवाद - सुदर्शन सिंह, पृष्ठ सं- 2)

यहां सूरदास कहते हैं कि रघुवीर रघुकुल में उत्पन्न हुए हैं, उनके जन्मोत्सव पर देश-देश के राजा-महाराजा बहुमूल्य भेंट लेकर राजा दशरथ के पास आए हैं। आज अयोध्या में बधाई के मंगल गान हो रहे हैं। माता कौशल्या का गर्भकाल पूर्ण हुआ और श्री राम रूपी महान अनमोल निधि ने पृथ्वी पर जन्म लिया। यहां सूर कहते हैं कि श्री राम का राज्य तो सदा सर्वदा है ही सूरदास ने भी वहीं से वाह-वाही प्राप्त की है। यहां सूरदास द्वारा रामजन्म की लोक में उपस्थित लोकप्रियता का प्रमाण मिलता है और सूर का राम के प्रति समर्पित भाव भी स्पष्ट दिखाई पड़ता है।

जब गोस्वामी जी ब्रजभाषा में राम के बालरूप का निरूपण करते हैं तो वह सूर के वात्सल्य वर्णन के अत्यंत समीप ठहरता है। कवितावली में तुलसीदास ने राम की बाल लीला का सुंदर वर्णन किया है -

"कबहूं ससि मागत आरि करै कबहूं प्रतिबिंब निहारि डरै।

कबहूं करताल बजाइकै नाचत मातु सबै मन मोद भरै ॥

कबहूं रिसिआई कहैं हठिकै पुनि लेत सोई जेहि लागि अरै।

अवधेश के बालक चारि सदा तुलसी-मन- मंदिर में बिहरै ॥"[7]

(कवितावली, गोस्वामी तुलसीदास, पृष्ठ सं- 2)

यहां गोस्वामी जी राम की बाल-लीला का जिस प्रकार वर्णन करते हैं, वह सूर के कृष्ण बाललीला का स्मरण कर देता है। यहां राम और उनके तीनों भाई चंद्रमा मांगने का हठ करते हैं। कभी अपनी परछाई देखकर डरते हैं, कभी हाथ से ताली बजा- बजाकर नाचते हैं, जिससे सब माता के हृदय आनंदित हो जाते हैं। राम की बाल-लीला और

जन्मोत्सव का जो वर्णन ब्रज भाषा में देखने को मिलता है वह अत्यंत मनोरम एवं सरस शैली में अभिव्यक्त हुआ है। राम के जन्म पर समस्त लोक प्रसन्न है। गीतावली के बालकांड में गोस्वामी जी लिखते हैं -

"आजु सुदिन सुभ घरी सुहाई।

रूप- सील- गुन-धाम राम नृप-भवन प्रकट भए आई॥

.. उमगि चल्यौ आनंद लोक तिहुं, देत सबनि मंदिर रितए।

तुलसिदास पुनि भरेइ देखियत, रामकृपा चितवनि चितए॥"[8]

(गीतावली, गोस्वामी तुलसीदास, पृष्ठ सं- 17, 24)

गीतावली में गोस्वामी जी का मुख्य प्रेय-माधुर्य, लालित्य एवं मार्मिकता है। गीतावली का वात्सल्य वर्णन, बालरूप- निरूपण, वनमार्ग में राम, चित्रकूट प्रसंग आदि अत्यंत प्रशंसनीय है। मार्मिक प्रसंगों में रामवनगमन, कौशल्या की विरह वेदना, लक्ष्मण- मूर्छा,अयोध्या में भरत- हनुमान मिलन, आदि महत्वपूर्ण है।

कवितावली में सामाजिक पक्ष का प्राधान्य है। तत्कालीन समाज का परिदृश्य कवितावली में प्राप्त होता है -

"खेती न किसान को, भिखारी को न भीख, बलि,

बनिक को बनिज , न चाकर को चाकरी।

जीविका विहीन लोग सिद्यमान सोच बस,

कहैं एक-एकन सों 'कहां जाई, का करी ?

वेदहूं पुरान कही, लोकहूं बिलोकियत,

सांकरे सबै पै, राम! रावरें कृपा करी।

दारिद दसानन दबाई दुनी, दीनबंधु।

दुरित दहन देखि तुलसी हहा करी।"[9]

(कवितावली, गोस्वामी तुलसीदास, पृष्ठ सं-112)

इस पद में गोस्वामी जी तत्कालीन समय की विषम परिस्थितियों का यथार्थ परक दृष्टि से निरूपण करते हैं। ब्रजभाषा में रचित यह पद मध्यकालीन सामाजिक स्थिति को समझने का यथार्थ दस्तावेज माना जा सकता है। ब्रजभाषा को बहुमुखी अभिव्यंजना से परिपूर्ण करने का श्रेय सूरदास को जाता है। राम के कोमल हृदय की वेदना और व्याकुलता का चित्रण जैसा सूरदास करते हैं, वैसा अन्यत्र दुर्लभ है-

"रघुपति कहि प्रिय- नाम पुकारत।

हाथ धनुष लीन्हे, कटि भाथा ,चकित भए दिसि - विदिसि निहारत॥

निरखत सून भवन जड़ है रहे, खिन लोटत धर, बपु न संभारत।

हा सीता, सीता, कहि सियपति, उमड़ि नयन जल भरि- भरि ढारत ।।

लगत सेष- उर विलखि जगत गुरु, अद्रुत गति नहिं परति विचारत ।

चिंतत चित्त 'सूर' सीतापति, मोह मेरु- दुख टरत न टारत ।।"[10]

(सूर रामचरितावली, सूरदास कृत, अनुवाद सुदर्शन सिंह, पृष्ठ सं- 45)

इस पद में सूर ने राम के मानवीय स्वरूप को निरूपित किया है। यहां राम देवत्व समान नहीं है। अपने प्रिय के वियोग पर जिस प्रकार सामान्य जनमानस व्याकुल और दुखी होता, उसी प्रकार सीता के वियोग पर राम दुखी हैं। उनके नेत्रों से अश्रु गिर रहे हैं और वह सीता के नाम को पुकारते हुए उन्हें ढूंढ रहे हैं। ब्रजभाषा में राम के चरित्र का वर्णन करते समय अनेक ऐसे प्रसंग आए हैं, जहां पर लोकजन और काव्य में साधारणीकरण घटित होता है। जब राजा दशरथ राम को राजा बनाने के लिए सोचते हैं और इस समय कैकई राम के लिए वनवास मांगती हैं। इसका वर्णन भी सूरदास बहुत ही मार्मिक रूप से अभिव्यक्त करते हैं -

"महाराज दसरथ मन धारी ।

अवधपुरी कौ राज राम दै, लीजै व्रत वनचारी ।।

यह सुनि बोली नारि कैकई, अपनौ वचन संभारौ ।

चौदह वर्ष रहैं वन राघव, छत्र भरत सिर धारौ ।।

यह सुनि नृपति भयौ अति व्याकुल, कहत कछु नहिं आई ।

सूर रहे समुझाइ बहुत, पै कैकई हठ नहिं जाई ।।"[11]

(सूर राम चरितावली, सूरदास कृत, अनुवाद सुदर्शन सिंह, पृष्ठ सं-15)

यहां सूरदास कहते हैं कि राजा दशरथ कैकई को विविध प्रकार से समझते हैं किंतु कैकई अपना हठ नहीं छोड़ती । सूरदास कृत रामचरितावली में रामचरित के विविध प्रसंगों को अद्भुत शैली और विविधता के साथ अभिव्यक्त किया गया है। कहीं-कहीं ऐसा प्रतीत होता है कि सूर कृष्ण भक्त न होकर राम भक्त ही है, क्योंकि बिना समर्पित भाव के इस तरह की अभिव्यक्ति संभव नहीं है। राम-वनवास के समय राम सीता का संवाद अत्यंत भावपूर्ण एवं मार्मिक है। राम सीता से कहते हैं -

"तुम जानकी! जनकपुर जाहु ।

कहा आनि हम संग भरमिहौ, गहबर बन दुख- सिंधु अथाहु ।।..

ऐसौ जिय न धरौ रघुराइ ।

तुम सौ प्रभु तजि मो-सी दासी, अनंत न कहूं समाइ ।।"[12]

(सूर राम चरितावली, सूरदास कृत, अनुवाद सुदर्शन सिंह, पृष्ठ सं-19)

यहां सूरदास कहते हैं कि राम सीता को समझते हैं कि हे जानकी तुम जनकपुर चली जाओ। मेरे साथ चलकर कहां भटकती फिरोगी, बहुत घने वन हैं और उनमें अथाह दुख का समुद्र लहराता है। इस पर सीता जी उत्तर देती हैं कि हे रघुनाथ, ऐसा विचार आप चित्त में मत रखिए। आपके समान स्वामी को छोड़कर मैं और कहीं आश्रय नहीं ले सकती। यहां एक आदर्श प्रेम एवं समर्पण के भाव को देखा जा सकता है। यह भाव समाज में एक आदर्श की स्थापना भी करता है।

तुलसी जब ब्रज भाषा में रामचरित का वर्णन करते हैं, तो वहां मार्मिकता एवं माधुर्यता का प्रभाव और अधिक बढ़ जाता है। वन के मार्ग में जब सीता, राम, लक्ष्मण जाते हैं, वहां का ये चित्रण जनमानस के हृदय को भावुक कर देता है। सीता सुकुमारी होने के कारण थक जाती हैं। इस प्रसंग को गोस्वामी जी ने अत्यंत मार्मिकता के साथ वर्णित किया है -

"पुरतें निकसी रघुवीरवधू धरि धीर दए मगमें डग द्वै ।

झलकी भरि भाल कनी जलकी, पुट सूखि गए मधुराधर वै ।।

फिरि बुझति हैं, चलनो अब केतिक, पर्नकुटी करिहौ कित है?

तिय की लखि आतुरता पिय की अंखियांअति चारू चलीं जल च्वै ।।"[13]

(कवितावली, गोस्वामी तुलसीदास, पृष्ठ सं-17)

यहां तुलसी राम के जिस रूप का वर्णन करते हैं, वह मानवीय भावनाओं से परिपूर्ण है। देवत्व से परे है। यहां सीता के कष्ट को देखकर राम व्याकुल हो जाते हैं और उनकी आँखों अश्रु बहने लगते हैं। जिस प्रकार किसी सामान्य मनुष्य की स्थिति होती है। सूर एवं तुलसी दोनों ही जब राम-सीता के प्रसंग को वर्णित करते हैं तो वह समतुल्य ही प्रतीत होता है। गीतावली में भी इसी प्रसंग को अद्भुत रूप से लिखा गया है। सीता राम के साथ वनवास जाना चाहती हैं। राम के मना करने पर सीता सामान्य नायिका की तरह ही विकल होकर कहती हैं -

"कहौ तुम्ह बिनु गृह मेरो कौन काजु?

बिपिन कोटि सुरपुर समान मोको, जो पै पिय परिहरयो राजु ।।"[14]

(गीतावली, गोस्वामी तुलसीदास, पृष्ठ सं-157)

यहां तुलसी के भक्त कवि होने के साथ-साथ उनके कवि हृदय के सभी भावों का अद्भुत विश्लेषण देखने को मिलता है। रामकथा संबंधी अनेक चित्रफ़लक ऐसे हैं, जिनमें राम-सीता और लक्ष्मण को वनमार्ग पर जाते हुए दिखाया गया है। यहां राम की मधुर झांकी का अवलोकन किया गया है। गीतावली में उनका ललित भाव ही व्यक्त हुआ है। कहीं-कहीं श्रीराम के रूप- माधुर्य तथा करुण रस के आस्वादन का अवसर भी मिलता है। चित्रकूट में राम-भरत के मिलन का मार्मिक चित्रण गीतावली में दिखाई देता है। भरत अत्यंत संकोच के साथ राम के समीप पहुंचते हैं और कहते हैं -

"भरत भए ठाढ़े कर जोरि ।

है न सकत सामुहें सकुचबस समुझि मातुकृत खोरि ।।

फिरिहैं किधौ फिरन कहिहैं प्रभु कलपि कुटिलता मोरि ।

हृदय सोच, जल भरे बिलोचन, नेह देह भइ भोरि ।।

... तुलसी राम सुभाव सुमिरि, उर धरि धीरजहि बहोरि ।

बोले बचन विनीत उचित हित करूना रसहि निचोरि ।।"[15]

(गीतावली, गोस्वामी तुलसीदास, पृष्ठ सं- 218)

यहां गोस्वामी जी ने भ्रातत्व प्रेम और पश्चाताप के समन्वित रूप का वर्णन किया है। भाव - व्यंजना की दृष्टि से भी यह पद अत्यंत महत्वपूर्ण है। गीतावली एक सफल प्रगीत काव्य है। भरत के दुख, पीड़ा और ग्लानि को देखकर राम उन्हें समझाते हुए कहते हैं कि -

"काहे को मानत हानि हिये हौं?

प्रीति - नीति- गुन- सील धरम कहं तुम अवलंब दिये हौ ।।"[16]

(गीतावली, गोस्वामी तुलसीदास, पृष्ठ सं- 222)

राम का चरित्र ऐसा ही है, जिसमें धर्म, धैर्य, मर्यादा, शील एवं भ्रातत्व प्रेम का समन्वय एक साथ विराजमान है। राम भरत को समझाते हैं कि तुमने तो प्रीति, नीति, गुण, शील और धर्म सभी को सहारा दे रखा है। भ्रातत्व प्रेम का ऐसा उदाहरण भारतीय समाज और संस्कृति का संवाहक है। जिसे तुलसी एवं सूरदास दोनों ने ही अपने-अपने ढंग से वर्णित किया है। सूरदास जी चित्रकूट में श्री राम एवं भरत के मिलन और संवाद का मार्मिक वर्णन करते हैं -

"तुमहि बिमुख रघुनाथ, कौन विधि जीवन कहां बनै ।

चरन - सरोज बिना अवलोके, को सुख धरनि गने ।।

हठ करि रहे, चरन नहिं छाड़े, नाथ तजौ निठुराई ।

परम दुखी कौसल्या जननी, चलौ सदन रघुराई ।।

चौदह बरस तात की आज्ञा, मोपै मेटि न जाई ।

सूर स्वामि की पांवर सिर धरि भरत चले बिलखाई।।"[17]

(सूर रामचरित्रावली, सूरदास कृत अनुवाद सुदर्शन सिंह, पृष्ठ सं- 37)

यहां सूरदास ने भरत के राम प्रेम को जिस प्रकार वर्णित किया है, वह अत्यंत मार्मिक है। ऐसा प्रतीत ही नहीं होता कि सूर की रामभक्ति हैं वह रामचरित का बखान अत्यंत समर्पित भाव से करते हैं। राम के जीवन चरित से जुड़े सूक्ष्म से सूक्ष्म तत्वों का निरूपण सूर के रामकाव्य में मिलता है। भरत का विलाप करना जनमानस के हृदय को भी व्याकुल कर देता हैं। इस काव्य में अनेक ऐसे मार्मिक प्रसंगों की अभिव्यक्ति देखने को मिलती है जो लोक जीवन

से जुड़ी हुई है। सीताहरण के पश्चात राम सामान्य मनुष्य की भांति प्रकृति, वन और लताओं से सीता का पता पूछते हुए कहते हैं -

"फिरत प्रभु पूछत वन-द्रुम- वेली।

अहो बंधु, काहू अवलोकी इहि मग वधू अकेली ?

अहो बिहंग, अहो पंनग - नृप, या कंदर के राइ।

अब कें मेरी विपति मिटाऔ, जानकि देहु बताइ ॥"[18]

(सूर राम चरितावली, सूरदास कृत अनुवाद सुदर्शन सिंह, पृष्ठ सं- 48)

प्रभु श्रीराम वन की लताओं, वृक्षों से पूछते घूम रहे हैं कि हे सखा! क्या तुममें से किसी ने इस मार्ग से जाती हुई मेरी पत्नी को देखा है। जानकी का पता राम पूछते हुए अत्यंत व्याकुल हो जाते हैं। सूर के रामकाव्य की यह भी विशेषता है कि मानस की तरह इसमें सात कांड है, जिसमें मानस में निरूपित प्रसंग के समान ही सभी प्रसंग अत्यंत मार्मिकता के साथ वर्णित है। सूर के राम में शरणागत की रक्षा का जो भाव है, वह अत्यंत उत्कृष्ट रूप से अभिव्यक्त होता है। राम अनंत शक्ति के भंडार है, साथ ही धैर्य, गंभीरता एवं कोमलता का भाव भी राम के चरित्र में विद्यमान है। सूर के रामकाव्य में मार्मिक स्थलों को पहचान कर भावानुभूति के साथ उसे अभिव्यक्त किया गया है। सूर के रामकाव्य को पढ़कर प्रतीत होता है कि सूर ने राम और कृष्ण में एकात्म भाव को स्वीकार कर लिया है। एक और प्रसंग लोक का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करता है। हनुमान का अशोक वाटिका में सीता से भेंट। हनुमान जब सीता जी से मिलते हैं और जो संवाद होता है वह अत्यंत रोचक है -

"वनचर! कौन देस ते आयौ ?

कहां वे राम, कहां वे लछिमन क्यौ करि मुद्रा पायौ ?

हौ हनुमंत, राम कौ सेवक, तुम सुधि लैन पठायौ।

रावन मारि, तुम्हें लै जातौ, रामाज्ञा नहिं पायौ।

तुम जनि डरपौ मेरी माता, राम जोरि दल ल्यायौ।

सूरदास रावन कुल- खोवन सोवत सिंह जगायौ ॥"[19]

(सूर राम चरितावली, सूरदास कृत अनुवाद सुदर्शन सिंह, पृष्ठ सं- 82)

इस पद में सीता जी हनुमान से प्रश्नात्मक शैली में उनका परिचय पूछती है और हनुमान जी उसका उत्तर देते हैं। यह प्रसंग और वाकपटुता अत्यंत प्रभावी दिखाई देती है। कहा जाए तो राम का चरित भारतीयता एवं सनातन परंपरा का पर्याय है, जिसमें मानवीयता के सभी गुण विद्यमान है। गीतावली में कुछ ऐसे पद भी आते हैं, जिसमें राम लक्ष्मण के बाण लगने पर व्यथित हो जाते हैं और एक सामान्य मानव की तरह उनकी स्थिति परिलक्षित होती है। यहां राम भरत प्रेम, राम लक्ष्मण का प्रेम समाज के सामने नए प्रतिमान स्थापित करने का कार्य करता है। गोस्वामी जी लिखते हैं -

"राम लखन उर लाय लये हैं।

भरे नीर राजीव नयन सब अंग परिताप तए हैं॥

मेरो सब पुरुषारथ थाको।

विपत्ति बंटावन बंधु - बाहु बिनु करौ भरोसो काको॥"[20]

(गीतावली, गोस्वामी तुलसीदास, पृष्ठ सं-313)

तुलसी ने राम के स्वरूप को जिस प्रकार वर्णित किया है, वह लोकमंगल प्रधान जीवन दृष्टि को अपने में समाहित करते हैं। तत्कालीन समय में शैव- वैष्णव संघर्ष को समन्वय में परिवर्तित करने की क्षमता भी रामकाव्य के रूप में ही दिखाई देती है। एक ओर तो रामकाव्य भारतीय दर्शन और परंपरा का महाप्रतीक है तो दूसरी ओर विचार के इतिहास का नूतन समन्वय एवं संस्कार भी इसमें स्थापित है। कई आंतरिक अंतरविरोधों के बाद भी राम का चरित सामंजस्य में परिलक्षित होता है।

श्रीराम के स्वरूप एवं कथा का रसास्वादन अविरल ऐतिहासिक चेतना की सिद्धि भी मानी जा सकती है। गीतावली में राम के जीवन संबंधी कुछ घटना- झांकियां, बाल - चित्रण, मार्मिक भाव बिंदु, ललित रस स्थल, करुण दशा आदि को प्रगीतात्मक बोध के साथ रचा गया है।

कवितावली में गोस्वामी जी लोकचित्त एवं जनजीवन के प्रतीकरूप में राम के स्वरूप को स्थापित करते हैं। इसमें राम का चरित्र शरणागत वत्सलभाव की प्रधानता को लिए हुए हैं। वे राखनहारा है, राम सभी से प्रेम करते हैं। यहां तुलसी विविध चरित्रों के माध्यम से राम के दयालु, कृपानिधान स्वरूप का वर्णन करते हैं ,साथ ही सुग्रीव और विभीषण पर की गई राम कृपा की प्रशंसा करते हैं। गीतावली में तुलसी बार-बार राम के लिए रक्षक, दीनदयाल, शरणागतपाल कृपाल, गरीबनवाज, अनाथों के नाथ ऐसे विशेषण प्रयोग करते हुए दिखाई देते हैं -

"गये राम सरन सबकौ भलो।

गनी -गरीब, बड़ो- छोटो, बुध- मूढ़, हीनबल- अतिबलो॥

पंगु- अंध, निरगुनी - निसंबल, जो न लहै जाचे जलो।

सो निबघो नीके, जो जनमि जग राम राजमारग चलो॥"[21]

(गीतावली, गोस्वामी तुलसीदास, पृष्ठ सं- 295)

इन रचनाओं का अध्ययन करने के पश्चात एक बात और स्पष्ट होती है कि सबके अपने-अपने राम है, जिसने जिस दृष्टि से राम के चरित्र को पहचाना, उसी रूप में उसे रच दिया। युगानुरूप रामकथा में कहीं कहीं परिवर्तन भी किया, परंतु राम का जो आदर्श है वह सभी में ही विद्यमान है। महामहोपाध्याय गंगानाथ झा राम के आदर्श के विषय में लिखते हैं-

"एक बार रावण कुंभकरण को जगा कर कहते हैं कि मैं राम की भार्या का अपहरण किया, किंतु सीता राम के अतिरिक्त किसी को नहीं चाहती। इस पर कुंभकरण कहते हैं आप कामरूपी हैं, राम के रूप को क्यों नहीं धारण

करते और रावण यह उत्तर देता है कि मैं कई बार राम की सुरुचिर तालदल - श्यामल रूप धारण कर चुका हूं, किंतु राम का रूप धारण करते ही मेरी पाप बुद्धि नष्ट हो जाती है.. सुरुचिरं तालदल - श्यामलं रामाङ्कभजतो ममापि कलुषो न संजायते भावो।" [22]

(रामकथा और तुलसीदास, फादर डॉ कामिल बुल्के, पृष्ठ सं- 36)

लोक हृदय की अपनी कथा होती है। वह शाश्वत सनातन रामकथा को भी अपने अनुरूप ढाल लेती है। नियम एवं शास्त्रीयता के बंधन से मुक्त लोक हृदय की सरलता और सहजता के प्रभाव में ब्रजभाषा राम काव्य जन-जन के हृदय को आह्लादित करने में पूर्णता सक्षम है। तुलसी की रामकथा जनमानस का साकार बिम्ब है। सनातन वैदिक संस्कृति के साथ-साथ मर्यादाओं का सम्यक संतुलन तुलसी के रामकाव्य में है। सगुण-निर्गुण, शैव- वैष्णव- शाक्त एवं विभिन्न दार्शनिक सिद्धांतों व दर्शनों का सुंदर समुच्चय है रामकाव्य। कहा जाए ब्रजभाषा में जब तुलसीराम काव्य का सृजन करते हैं तो उनकी दृष्टि लोकरंजन कारी है परंतु उनके काव्य का अभीष्ट सदैव ही लोकमंगल रहा है। संपूर्ण विश्व की चेतना को स्पंदित करने वाली राम कथा जन-जन में रमी हुई है। राम कथा भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग ही नहीं संस्कृति का समानार्थक पक्ष है। रामकाव्य में व्यापक आदर्श की स्थापना हुई है। यहां धर्म सार्वभौमिक, सर्वकालिक और सर्वमान्य है।

राम काव्य का प्रतिपाद्य- मर्यादा पुरुषोत्तम राम का चरित्र है, जो निरंतर ब्रह्म की सगुन लीला के माध्यम से भक्त हृदय को भाव विभोर करता है एवं उदात्त आदर्श की प्रतिष्ठा द्वारा सामान्य लोकमानस को विमुग्ध भी करता है। रामकाव्य परंपरा मूलतः भक्ति और संस्कृति की समन्वित भावभूमि पर अग्रसर रही है।

अतः निष्कर्ष रूप में कहा जाए तो सांस्कृतिक भाषा के रूप में ब्रजभाषा रामकाव्य का महत्व है। ब्रजभाषा में सरसता, लालित्य एवं माधुर्य गुणों की प्रधानता है, साथ ही संगीतात्मकता का गुण भी इसमें विद्यमान है। गीतावली, कवितावली में तुलसी ने रामचरित का जो निरूपण किया है, उसमें लालित्य एवं माधुर्यता की प्रधानता है। कवितावली और गीतावली में सात कांड है, परंतु मार्मिक प्रसंगों व शैली की दृष्टि से यह रचना मानस से थोड़ा अलग प्रतीत होती है। गोस्वामी जी को समाज व जनमानस की संवेदना, अनुभूति एवं उससे जुड़े मार्मिक प्रसंगों को समझने की अद्भुत क्षमता थी, जो उनके काव्यसृजन में परिलक्षित भी होता है। ब्रज और अवधी दोनों ही लोक की भाषा रही है। लोकभाषा में भारतीय संस्कृति के सनातन परंपरा के चरित्रों को जन-जन तक पहुंचाने का महत्वपूर्ण कार्य इन भक्त कवियों के द्वारा किया गया। तुलसी अपने विषय में स्वयं लिखते हैं कि

"कबित विवेक एक नहिं मोरे ।

सत्य कहउं लिखि कागद कोरे ।।"[23]

(रामचरितमानस, गोस्वामी तुलसीदास, पृष्ठ सं-12)

जिसके रचना संसार का इतना अधिक विस्तार हो फिर भी तुलसी यही स्वीकार करते हैं कि काव्य संबंधी एक भी बात का उन्हें ज्ञान नहीं। यह कोई विराट व्यक्तित्व का व्यक्ति ही स्वीकार कर सकता है। सूर के रामकाव्य विषय में कुछ भी कहना कम ही होगा। रामचरित से संबंधित जन्मोत्सव, शरक्रीड़ा, विश्वामित्र यज्ञ-रक्षा, धनुष भंग, सीता विवाह, राम वनगमन, कैकई वचन श्रीराम के प्रति, लक्ष्मण-केवट संवाद, भरत का चित्रकूट गमन, सीता हरण,

रामविलाप, हनुमान राम संवाद, सीता का हनुमान को चूणामणि देना, सीता राम मिलन, अग्नि परीक्षा, राज समाज वर्णन आदि विविध प्रसंगों का सूरदास ने अत्यंत सरसतापूर्ण, मार्मिकतापूर्ण एवं अद्भुत निरूपण किया है। सूरसागर के नवम स्कंध को पढ़कर यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि सूर कृष्ण भक्त होने के साथ-साथ राम के प्रति भी पूर्ण श्रद्धा एवं समर्पित भाव रखते थे, जिसका साक्षात प्रमाण उनके द्वारा रचित राम काव्य है। रामकथा भारत में ही नहीं अपितु विश्व में भी सर्व प्रसिद्ध और लोकप्रिय काव्य है।

अतः ब्रजभाषा में रचित राम काव्य की परंपरा अत्यंत विस्तृत है, किंतु तुलसी एवं सूर के ब्रजभाषा में रचित राम काव्य का वर्णन अद्वितीय है। लोकमंगल, लोकरंजक एवं समरसता की दृष्टि ही राम को जनमानस से जोड़ती है। तथ्य एवं संरचना दोनों ही दृष्टि से ब्रजभाषा में रचित रामकाव्य का महत्व एवं प्रासंगिकता सदैव ही अक्षुण्ण रूप से बनी रहेगी।

संदर्भ सूची :-

- तुलसीदास. गोस्वामी (संवत् 2049). श्रीरामचरितमानस. गोरखपुर. गीताप्रेस.
- सिंह. डॉ प्रभाकर (2019 प्रथम संस्करण). भारतीय भाषाओं में राम कथा. नई दिल्ली. वाणी प्रकाशन.
- शुक्ल. रामचंद्र. हिंदी साहित्य का इतिहास. वाराणसी. नागरी प्रचारिणी सभा.
- सिंह. सुदर्शन. अनुवाद. सूरदास कृत सूररामचरित्रावली (संवत 2012 प्रथम संस्करण). गोरखपुर. गीताप्रेस.
- तुलसीदास. गोस्वामी (संवत् 2061). कवितावली. गोरखपुर. गीता प्रेस
- तुलसीदास. गोस्वामी (संवत् 2077). गीतावली. गोरखपुर. गीता प्रेस
- सूरदास. सूर राम चरितावली. गोरखपुर. गीता प्रेस
- बुल्के. फादर डॉ कामिल (1977). रामकथा और तुलसीदास. प्रयागराज. हिंदुस्तानी अकादमी.

****